6

प्राथमिक शिक्षक के प्रति विद्यार्थियों की धारणाएँ
बच्चों द्वारा बनाए गए रेखाचित्रों का विश्लेषण

संदीप कौर*

प्राथमिक शिक्षा में विशेष रूप से विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों को प्रेरणास्रोत के रूप में देखा जाता है। 'शिक्षक' से संबंधित उनकी धारणाएँ विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभवों पर प्रतिबिंबित होती हैं। इसलिए शिक्षकों के प्रति विद्यार्थियों की धारणा जाँचना महत्वपूर्ण है क्योंकि वे विद्यार्थी के व्यवहार निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाते हुए उनके आगामी जीवन को प्रभावित करते हैं। इस अध्ययन का लक्ष्य प्राथमिक विद्यालय के दूसरी कक्षा में बच्चों की शिक्षक के प्रति धारणाओं पर आधारित बनाए गए रेखाचित्रों का अध्ययन करना है। अनुसंधान नमूना, यादृच्छिक नमूना विधि द्वारा दूसरी कक्षा के कुल 101 विद्यार्थियों (47 लड़कों और 54 लड़कियों) और चंडीगढ़ केंद्र शासित के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के 2017–18 सत्र से लिया गया। इसमें कक्षा की अवधि के दौरान बच्चों को शिक्षक के प्रति धारणा पर आधारित अपनी कल्पना द्वारा शिक्षक का रेखाचित्र बनाने को कहा गया। रेखाचित्रों का विश्लेषण अयाके (2012) द्वारा विकसित टीचर परसेप्शन कोडिंग सूची के साथ किया गया। अध्ययन से प्राप्त परिणाम के अनुसार अधिकतर बच्चों ने अपने शिक्षक को महिला, रंगीन एवं अच्छे कपड़े पहने हुए, हँसमुख और स्वच्छ दर्शाया। शिक्षक की शारीरिक बनावट को अधिकांश बच्चों ने स्वस्थ और सामान्य चित्रित किया। इसके अलावा बच्चों ने शिक्षण प्रक्रिया के दौरान ज़्यादातर शिक्षकों को कक्षा के अंदर, हाथ में चाक से बोर्ड पर लिखते हुए या हाथ में छड़ी पकड़े बोर्ड पर कुछ समझाते हुए या बोर्ड के बगल में खड़े हुए चित्रित किया।

© NCERT not to be republished

भूमिका

औपचारिक शिक्षा के मूल और आवश्यक तत्वों में से एक महत्वपूर्ण तत्व शिक्षक माना जाता है। वह विद्यार्थी समूह को विशिष्ट ज्ञान और कौशल सिखाता है और साथ ही उनके दृष्टिकोण और व्यवहार को आकार भी देता है। तदनुसार, विद्यार्थियों के लिए शिक्षकों का व्यवहार और व्यक्तित्व महत्वपूर्ण है। शिक्षक अपने व्यक्तिगत लक्षणों, जैसे— अच्छे कपड़े पहनना या नहीं, मित्रतापूर्वक व्यवहार करना या नहीं करना, सहिष्णु होना या हर चीज़ की आलोचना करना, आक्रामक या शांत होना, विद्यार्थियों के साथ सख्त या नम्र होना आदि द्वारा कक्षा के मनोवैज्ञानिक वातावरण

*शोधार्थी, डिपार्टमेंट ऑफ़ एजुकेशन, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़

का निर्माण करता है। शिक्षक के ऐसे व्यक्तिगत लक्षण विद्यार्थियों को सीधे तौर पर प्रभावित करते हैं। शैक्षिक वातावरण शिक्षक के व्यक्तित्व और व्यवहार से काफ़ी हद तक प्रभावित होता है (असलान, असलान, एवं अर्सलान-कैनसेवर, 2012)।

प्राथमिक विद्यालय का शिक्षक विद्यालय के पाठ्यक्रम में विषयों पर जानकारी देता हुआ बच्चों को रचनात्मकता और सीखने की तत्परता की ओर उन्मुख करता है। सक्षम शिक्षक, विद्यार्थियों में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करता है। इसके साथ ही उन्हें दूसरों के साथ प्रभावी संचार के लिए कौशल विकसित करने में सक्षम बनाता है। ऐसा शिक्षक बच्चे के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण लोगों में से एक होता है। प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक बच्चों के व्यक्तित्व विकास, व्यवहार के पैटर्न और किसी भी विषय के दृष्टिकोण पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि शैक्षिक प्रक्रिया की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए विद्यार्थी अपने शिक्षकों के साथ कैसा अनुभव करते हैं और उसके प्रति उनकी धारणा क्या है। आर्टुट. के. (2007) के अनुसार, बच्चे स्वाभाविक रूप से अपने रेखाचित्र में शिक्षक के साथ अपने रिश्ते को दर्शाते हैं। बच्चों के लिए रेखाचित्र अपने संपूर्ण मनोभावों को व्यक्त करने का आसान तरीका है। रेखाचित्र, भावों की अभिव्यक्ति और बच्चों की योग्यताओं का प्रतिबिंब के साथ-साथ शब्दों की बजाय चित्र द्वारा अपनी क्षमता और योग्यता को व्यक्त करने का शक्तिशाली उपकरण है। निजी वातावरण और मानवीय संबंधों के प्रति बच्चों की धारणा का प्रतिबिंब माना जाता है।

चर्नी, सिविर्ट, डिकी और फ्लिचबिल (2006) के अनुसार किसी विशेष विषय पर अपनी भावनाओं, विचारों और धारणाओं की व्याख्या करने के लिए बच्चों को रेखाचित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित करें। यह एक ऐसी विधि है जो प्राकृतिक अभिव्यक्ति के लिए प्रतीकात्मक समर्थन प्रदान करती है और उनके अंतर्मन की भावनाओं की अभिव्यक्ति और संबंधों को प्रतिबिंबित करती है। बच्चों के द्वारा बनाए गए चित्रों को उनके कथात्मक और प्रतीकात्मक विकास का दर्पण माना जाता है। छोटे बच्चों के लिए रेखाचित्र विचार अभिव्यक्ति की भाषा है (चेर्नी और अन्य, 2006)। पाँच साल के अधिकांश बच्चे बिना बाहरी रेखाओं के कुशलतापूर्वक उद्देश्यपूर्ण चित्रित कर सकते हैं और इन रेखाचित्रों में विवरण शामिल कर सकते हैं। वे रेखाचित्रों को नाम दे सकते हैं, उन्हें समझा सकते हैं (यवुज़र, 2013)।

लिंडरमैन (1997) के अनुसार बच्चे अंतर्ज्ञान से सीखते हैं। चार से सात वर्ष की आयु में वे रैखिक, विकर्ण और घुमावदार रेखाओं और बुनियादी ज्यामितीय आकृतियों, जैसे कि वृत्त, त्रिकोण और वर्ग में भेद कर सकते हैं और उन्हें अपने चित्रों में शामिल करते हैं। रेखाचित्र का आकार बच्चे के महत्व के अनुसार बदलता रहता है। वे वह चित्रित नहीं करते जो वे देखते हैं, बल्कि वस्तु या व्यक्ति के संबंध में उनके ज्ञान और धारणा के अनुसार चित्रित करते हैं। वे वयस्कों का आनुपातिक चित्र नहीं बना सकते। वे अपने आस-पास के वातावरण के बारे में उत्सुक होकर और अपनी कल्पना को रेखाचित्र से अभिव्यक्त कर स्वयं को सामाजिक प्राणी समझने लगते हैं।

© NCERT not to be republished

शोध विधि

बच्चों के रेखाचित्र विश्लेषण में विभिन्न अर्थों और उसके दृष्टिकोण के अध्ययन पर ज़ोर दिया जाता है। प्रतिभागियों द्वारा प्रदत्त मौखिक या लिखित अभिव्यक्ति या कोई अन्य दस्तावेज़ भी हो सकता है जो उस विशेष घटना, व्यक्ति या स्थान के बारे में उसकी धारणा या भावना को इंगित करता है (माइल्स और हबर्मन, 1994)। इस अध्ययन में प्राथमिक विद्यालय के दूसरी कक्षा के बच्चों द्वारा बनाए गए रेखाचित्रों के विश्लेषण और मूल्यांकन द्वारा विद्यार्थियों की अध्यापक के प्रति धारणा का अध्ययन किया गया है। अनुसंधान नमूना, यादृच्छिक नमूना विधि द्वारा किया गया है। इस अनुसंधान में चंडीगढ़ (केंद्रशासित प्रदेश) के चार सरकारी प्राथमिक विद्यालयों को लिया गया है। इस शोध में 2017–18 सत्र के दूसरी कक्षा के कुल 101 विद्यार्थी को लिया गया है।

परिणाम

आयके (2012) द्वारा विकसित 'शिक्षक धारणा कोडिंग सूची' विषयों के आधार पर अध्ययन के निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए। ये विषय लिंग, शारीरिक बनावट, हावभाव या चेहरे के भाव, शारीरिक विशेषताएँ, आकार, क्रिया के प्रकार, हाथ में वस्तुएँ और वर्णनात्मक (आवृत्ति और प्रतिशत) आँकड़ों के साथ तालिकाओं पर प्रस्तुत किए गए।

विद्यार्थियों के रेखाचित्र में शिक्षक का लिंग निर्धारण

इस अध्ययन ने शिक्षक के लिंग के बारे में बच्चों की धारणा को निम्न तालिका में दिखाया गया है।

तालिका संख्या 1

लिंग	आवृति	प्रतिशत
पुरुष	42	41.6
महिला	59	58.4
कुल संख्या	101	100.0

तालिका संख्या 1 की जाँच में पाया गया कि बच्चों की शिक्षक के महिला होने या पुरुष होने की धारणा में से अधिकतर यानि 58.4 प्रतिशत महिला शिक्षक की धारणा पाई गयी जबकि पुरुष शिक्षक मात्र 41.6 प्रतिशत रहे, जो महिला शिक्षक की तुलना में कम हैं। नीचे दिए गए चित्र 1 विषय के बारे में बच्चों के रेखाचित्र को दर्शाता हैं—

चित्र संख्या 1— महिला शिक्षक

© NCERT not to be republished

विद्यार्थियों के रेखाचित्र में शिक्षक का शारीरिक आकार

इस अध्ययन में शिक्षक के शारीरिक आकार से संबंधित निष्कर्ष निम्न तालिका में दिखाए गए हैं।

तालिका संख्या 2

शिक्षक का आकार	आवृति	प्रतिशत
वास्तविक	63	62.4
वास्तविक से बड़ा	23	22.8
वास्तविक से छोटा	15	14.9
कुल संख्या	101	100.0

तालिका संख्या 2 की जाँच में पाया गया कि शिक्षक के शारीरिक आकार को अधिकतर विद्यार्थियों ने वास्तविक ही चित्रित किया है जो 62.4 प्रतिशत है।

चित्र संख्या 3— शिक्षक का वास्तविक से बड़ा आकार

चित्र संख्या 2— शिक्षक का वास्तविक आकार

चित्र संख्या 4— शिक्षक का वास्तविक से छोटा आकार

© NCERT not to be republished

विद्यार्थियों के रेखाचित्र में शिक्षक के वस्त्र

इस अध्ययन में शिक्षक के वस्त्र को चित्रित किया गया जिसे निम्न तालिका में दिखाया गया है—

तालिका संख्या 3

शिक्षक के वस्त्र	आवृति	प्रतिशत
कोट-पैंट	14	13.9
साड़ी	26	25.7
सूट	21	20.7
स्कर्ट	14	13.9
टाई	10	9.9
अन्य	16	15.8
कुल संख्या	101	100.0

तालिका संख्या 3 की जाँच में पाया गया कि अधिकतर विद्यार्थियों ने शिक्षक के वस्त्रों को साड़ी में दर्शाया है जो कुल में से 22.8 प्रतिशत हैं। तालिका संख्या 1 में अधिकतर विद्यार्थियों की धारणा महिला शिक्षक की रही है और महिला शिक्षक को अधिकतर विद्यार्थियों ने साड़ी में चित्रित किया है।

चित्र संख्या 5— महिला शिक्षक साड़ी पहने हुए

विद्यार्थियों के रेखाचित्र में शिक्षक के हावभाव या चेहरे के भाव

इस अध्ययन में शिक्षक के हावभाव या चेहरे के भाव की जाँच की, और इसके निष्कर्ष निम्न तालिका में दिखाए गए हैं—

तालिका संख्या 4

शिक्षक के हावभाव या चेहरे के भाव	आवृति	प्रतिशत
अप्रसन्न	14	13.9
हँसमुख	46	45.5
विचारशील	17	16.8
कुछ भी चित्रित नहीं	24	23.8
कुल संख्या	101	100.0

तालिका संख्या 4 की जाँच में पाया गया कि अधिकतर विद्यार्थियों ने शिक्षक को हंसमुख चित्रित किया है जिसका कुल में से 45.5 प्रतिशत चित्रित किया गया है।

चित्र संख्या 6— शिक्षक के हंसमुख हावभाव

© NCERT not to be republished

विद्यार्थियों के रेखाचित्र में शिक्षक की शारीरिक विशेषताएँ

इस अध्ययन में शिक्षक की शारीरिक विशेषताओं की जाँच की गई है और इसके निष्कर्ष निम्न तालिका में दिखाए गए हैं—

तालिका संख्या 5

शिक्षक की शारीरिक विशेषताएँ	आवृति	प्रतिशत
स्वच्छ एवं स्वस्थ शरीर	33	32.7
अव्यवस्थित बाल	21	20.8
मूँछें	10	9.9
चश्में लगाए हुए	15	14.9
कुछ भी चित्रित नहीं	22	21.8
कुल संख्या	101	100.0

तालिका संख्या 5 की जाँच में पाया गया कि अधिकतर विद्यार्थियों ने अपने शिक्षक को स्वच्छ एवं स्वस्थ शरीर के रूप में चित्रित किया जो कुल में से 32.7 प्रतिशत है।

चित्र संख्या 7— शिक्षक की स्वस्थ एवं स्वच्छ शारीरिक बनावट

विद्यार्थियों के रेखाचित्र में शिक्षक की क्रियाओं के प्रकार

इस अध्ययन में शिक्षक के कार्यों की जाँच की और इसके निष्कर्ष निम्न तालिका में दिखाए गए हैं—

तालिका संख्या 6

शिक्षक की क्रियाएँ	आवृति	प्रतिशत
व्याख्यान देते हुए	14	13.9
खड़े हुए	17	16.8
विद्यार्थियों से बात करते हुए	21	20.8
कक्षा में टहलते हुए	17	16.8
बोर्ड पर लिखते हुए	32	31.7
कुल संख्या	101	100.0

तालिका संख्या 6 की जाँच में पाया गया कि अधिकतर विद्यार्थियों द्वारा शिक्षक को श्यामपट्ट पर चॉक से लिखते हुए दर्शाया गया जो कुल में से 31.7 प्रतिशत है।

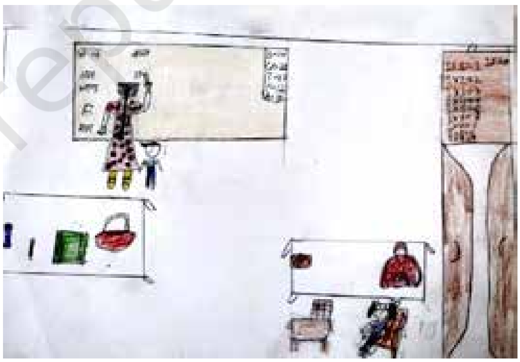

चित्र संख्या 8— शिक्षक ब्लैकबोर्ड पर चाक से लिखते हुए

विद्यार्थियों के रेखाचित्र में शिक्षक के हाथ में वस्तुएँ

इस अध्ययन में शिक्षक के हाथ में वस्तुओं की जाँच की और इसके निष्कर्ष तालिका 7 में दिखाए गए हैं—

तालिका संख्या 7

शिक्षक के हाथ में वस्तुएँ	आवृति	प्रतिशत
पुस्तक	20	19.8
चाक	33	32.7
पर्स	11	10.9
छड़ी	19	18.8
कुछ भी चित्रित नहीं	18	17.8
कुल संख्या	101	100.0

तालिका 7 की जाँच में यह पाया गया कि अधिकतर विद्यार्थियों ने शिक्षक के हाथ में चॉक, पुस्तक और छड़ी को दर्शाया जो क्रमशः 32.7, 19.8 और 18.8 प्रतिशत है।

चित्र संख्या 9— शिक्षक हाथ में चाक पकड़े हुए

परिणाम और विचार-विमर्श

इस शोध के प्राप्त आँकड़ों में लड़कियों और लड़कों दोनों ने अपने शिक्षकों को अधिकतर 'महिला' के रूप में चित्रित किया। इससे यह कहा जा सकता है कि

चित्र संख्या 10— शिक्षक हाथ में छड़ी पकड़े हुए

सामान्य तौर पर, बच्चे शिक्षक के लिंग को 'महिला' के रूप में समझते हैं। प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक की भूमिका में महिलाएँ अधिक उपयुक्त हैं और स्कूलों में ज़्यादा संख्या में महिला शिक्षक होने से बच्चों की शिक्षक के प्रति धारणा अत्यंत प्रभावित होती है। इस प्रकार संयुक्त राज्य अमेरिका (इंगरसोल, मेरिल और मई, 2012) में किए गए अध्ययन के अनुसार, शिक्षण कार्य में महिलाओं का अनुपात बढ़ रहा है। इस आँकडे के अनुसार, प्राथमिक विद्यालय स्तर पर महिला शिक्षकों का अनुपात 52 प्रतिशत है। विकसित देशों में शिक्षा हमेशा व्यवसायों की एक पारंपरिक शाखा रही है और उन महिलाओं के लिए उपयुक्त मानी जाती है जो परिवार और व्यवसाय दोनों चाहती हैं (यूनेस्को, 2012)। वर्ष 1991–2004 के बीच की गई तुलना में कई देशों में यह अनुपात बढ़ा जबकि 1991 में प्राथमिक शिक्षा में महिला शिक्षकों का दुनियाभर में अनुपात 56 प्रतिशत था। यह 2004 में बढ़कर 61 प्रतिशत हो गया (यूनेस्को, 2006)। सभी सांख्यिकीय जानकार से संकेत मिलता है कि शिक्षण

© NCERT not to be republished

पेशा पुरुषों की तुलना में महिलाओं द्वारा अधिक चुना जाता है।

इस अध्ययन में पाया गया कि लड़कियों और लड़कों दोनों ने अपने शिक्षकों को अकसर साड़ी या सूट में चित्रित किया। इससे समाजीकरण प्रक्रिया में लैंगिक भूमिकाओं के अधिग्रहण के रूप में समझा जा सकता है। बच्चों का साड़ी या सूट में शिक्षकों को चित्रित करने का कारण, उनकी शिक्षक के लिंग के प्रति महिला होने की धारणा से संबंधित है।

गिडेंस (2009) ने इसे समाजीकरण को अधिग्रहण करने की जानकारी के रूप में समझाया है। यह उस समाज के लिए मान्य है जिसमें बच्चे पैदा हुए हैं। इसके अलावा डॉगन (2011) ने सामाजिक मानदंडों को सांस्कृतिक मानदंडों, मूल्यों और सामाजिक जीवन के अन्य पहलुओं को सीखकर समाज के आम जीवन में व्यक्ति की भागीदारी के रूप में माना। मोरा (2005) के अनुसार, इसमें समाज में अपनी भूमिका समझने के लिए सामाजिक व्यवस्था में लिंग के महत्व और उसकी भूमिका के बारे में सीखना शामिल है। समाजीकरण प्रक्रिया में सर्वप्रथम परिवार, जैसे— माता-पिता, बहन-भाई एवं अन्य सदस्य और उसके बाद विद्यालय में शिक्षक और सहपाठी प्रभावी भूमिका निभाते हैं। स्कूलों में पाठ्यपुस्तकों से विद्यार्थी समाज में महिला और पुरुष की भूमिकाओं के बारे में सीखते हैं (टिट्ज़, 2007)। भारत जैसे देश में पाठ्यपुस्तकों की छवियों में महिला को अकसर साड़ी और सूट पहने ही दर्शाया जाता है। इस लिंग अंतर के आधार पर पाठ्यपुस्तकों और चित्रों द्वारा बच्चे विभिन्न लिंगों और उनकी शारीरिक बनावट के बारे में सीखते हैं।

इस अध्ययन में अधिकतर बच्चों ने अपने शिक्षकों के हावभाव या चेहरे के भावों को 'हंसमुख' चित्रित किया है। इसमें लिंग के आधार पर भिन्नता नहीं है। असलान एवं अन्य (2012) के अनुसार शिक्षक का मूल दृष्टिकोण और व्यवहार विद्यार्थी पर नकारात्मक या सकारात्मक प्रभाव छोड़ता है। इस अध्ययन से अनुमान लगाया जा सकता है कि बच्चे अपने शिक्षकों के 'सकारात्मक रूप' को अधिक समझते हैं।

बच्चों ने अपने शिक्षकों की शारीरिक बनावट को सामान्य रूप से 'स्वच्छ और स्वस्थ' चित्रित किया है क्योंकि बच्चे सकारात्मक तरीके से शिक्षकों की शारीरिक बनावट को देखते हैं। यह अध्ययन भी यही इंगित करता है कि शिक्षकों को शारीरिक रूप से विद्यार्थियों द्वारा सकारात्मक समझा गया है। इसके अलावा विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों को वास्तविक से बड़ा चित्रित किया गया। यवुज़र (2013) ने कहा कि कुछ मामलों में बच्चे शिक्षकों को उनकी प्रशंसा के कारण वास्तविक या अनुपात से बड़ा बना सकते हैं। पायने (1990) के अनुसार बच्चे उन लोगों को चित्रित करते हैं जिन्हें वे मज़बूत और बड़े आकार में समझते हैं। इस अध्ययन से पता चलता है कि वास्तविक से बड़े चित्र सकारात्मक मूल्य दर्शाता है।

शोध में अधिकतर बच्चों ने अपने शिक्षकों को हाथ में चॉक के साथ बोर्ड पर लिखते हुए चित्रित

किया, जिससे विद्यार्थी की धारणा शिक्षक द्वारा कोई जानकारी प्रदान करने की धारणा की पुष्टि करती है। बिर्च और लैड (1997) के अनुसार शिक्षक को पढ़ाते या सिखाते हुए चित्रित करना कक्षा या विद्यालय के सकारात्मक वातावरण को दर्शाता है। इस प्रकार, वर्तमान अध्ययन में बच्चों द्वारा बोर्ड पर लिखते हुए या पढ़ाते हुए चित्रित करना अपने शिक्षकों के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण बताता है।

समाज में सामाजिक और प्राकृतिक वातावरण बच्चों की धारणाओं को प्रभावित करते हैं। एक अन्य अध्ययन में जहाँ विभिन्न व्यवसायों के बारे में तुर्की में रहने वाले लोगों के पैटर्न का विश्लेषण किया गया, जिसमें सर्वाधिक 1161 प्रतिभागियों का शिक्षण (7.1 प्रतिशत) के मामले में सकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया। प्रतिभागियों ने शिक्षकों को भरोसेमंद (28.0 प्रतिशत) और मेहनती (20.1 प्रतिशत) दर्शाया (टुटकुन और कोच, 2008)। इस प्रकार अनुमान लगाया जा सकता है कि शिक्षकों के बारे में प्राथमिक आयु के बच्चों की सकारात्मक धारणा उनके सामाजिक और प्राकृतिक वातावरण से प्रभावित होती है।

प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक की सकारात्मक धारणा विकसित होने पर बच्चे को अधिक सकारात्मक भावनाओं के साथ अपनी शिक्षा जारी रखने में सक्षम कर सकती है। शिक्षक ज्ञान संचारित करने के अलावा विद्यार्थियों के व्यवहार को भी प्रभावित करते हैं। व्यक्तियों की आंतरिक शांति और दूसरों के साथ प्रभावी संचार के निर्माण की क्षमता उनकी प्राथमिक शिक्षा की सफलता पर निर्भर करती है। इस प्रकार कक्षा में शिक्षकों को विद्यार्थियों के लिए रोल मॉडल होना चाहिए और अपने ज्ञान और व्यक्तित्व के साथ उनका मार्गदर्शन करना चाहिए।

निष्कर्ष

कम उम्र में बच्चों के मनोवैज्ञानिक परीक्षण के लिए उनके द्वारा बनाए गए चित्रों को संज्ञानात्मक और वैचारिक परिपक्वता की अभिव्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है। अभिव्यक्ति के मौखिक और लिखित साधनों के समान चित्र भी बच्चों की भावनाओं और विचारों को प्रकट करने में सक्षम होते हैं। बच्चों द्वारा शिक्षक के प्रति धारणा को रेखाचित्र के माध्यम से प्रस्तुत करना शिक्षकों के लिए भी महत्वपूर्ण है। इन रेखाचित्र के माध्यम से शिक्षक-विद्यार्थी के मनोवैज्ञानिक, शैक्षणिक और सामाजिक विकास के बारे में जान सकते हैं और उन्हें मनोवैज्ञानिक परामर्श, शैक्षिक और व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान करने में सहायक हो सकते हैं। शोध के सबसे महत्वपूर्ण परिणामों में से एक यह है कि विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थियों की शिक्षक के प्रति धारणा और कल्पना में जैसे शिक्षक के पहनावे और शारीरिक बनावट इत्यादि चित्रित करने में भी विभिन्नता पाई गयी। जिससे यह सिद्ध होता है कि समाज और विद्यालय अटूट रूप से जुड़े हुए हैं और सामाजिक वातावरण का प्रभाव विद्यालय के मनोवैज्ञानिक वातावरण पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में दिखाई देता है। प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थी, शिक्षक और विद्यार्थी के बीच या माता-पिता और बच्चे के बीच के संबंध को समानता से देखता हैं। कम आयु वाले बच्चों का माता के ज़्यादा करीब रहने

© NCERT not to be republished

के कारण अधिकतर विद्यार्थियों ने शिक्षक को महिला के रूप में दर्शाया। यह शोध प्रतिभागियों द्वारा बनाए गए रेखाचित्र को विश्लेषित करने के लिए एक विशेष विश्लेषण तकनीक तक सीमित है। इसके अलावा इस तरह के शोधकार्य को बड़े नमूना आकारों के साथ विस्तृत सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में संचालित किया जा सकता है। इस अध्ययन में, बच्चों द्वारा रेखाचित्र की प्रक्रिया के दौरान कक्षा में शिक्षक उपस्थित होने से मानसिक रूप से उनके प्रभावित होने की संभावना रही होगी। आगे के अध्ययन में बच्चों को तब रेखाचित्र बनाने के लिए कहा जाए, जब उनके शिक्षक कक्षा में नहीं हों। यह अध्ययन प्राथमिक स्कूल तक सीमित रहा। भविष्य के अध्ययन माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर पर हो सकते हैं।

संदर्भ

असलान, के., एन. असलान और बी. अर्सलान-कैनसेवर. 2012. *इंट्रोडक्शन टू टिचिंग प्रोफ़ेशन*. पैगाम अकादमी, अंकारा. https://ankara.pegemakademi.com/ पर देखा गया।

अयाके, एन. 2012. द परसेप्शन ऑफ़ टीचर एंड लर्निंग प्रोसेस इन द पेंटिंग ऑफ़ प्राइमरी स्कूल स्टूडेंट्स. *एजुकेशन एंड साइंस*. (37)164. पृष्ठ 298–315. http://egitimvebilim.ted.org.tr/index.php/EB/article/view/973 पर देखा गया।

आर्टुट, के. 2007. *प्री-स्कूल में चित्रकारी की शिक्षा*. दूसरा संस्करण. ए.एन.आई. प्रकाशन, अंकारा. https://avesis.cu.edu.tr/kartut/publications पर देखा गया।

इंगरसोल, आर.एम., एल. मेरिल. और एच. मई 2012. रिटेनिंग टीचर्स: हाउ प्रिपरेशन मैटर्स. *एजुकेशनल लीडरशिप*. 69 (8). पृष्ठ 30–34. https://repository.upenn.edu/gse_pubs/550/ पर देखा गया।

बिर्च, एस.एच. और जी. डब्ल्यू. लैड 1997. द टीचर-चाइल्ड रिलेशनशिप एंड चिल्ड्रेन्स अर्ली स्कूल एडजस्टमेंट. *जर्नल ऑफ़ स्कूल साइकोलॉजी*. 35 (1). पृष्ठ 65–79. https://www.sciencedirect.com/journal/journal-of-school-psychology/vol/35/issue/1 पर देखा गया।

कान्सेवर, बी.ए. 2017. द चिल्ड्रेन'ज़ परसेप्शन ऑफ़ द टीचर: एन एनालिसिस ऑफ़ द ड्राइंगज़ क्रिएटेड बाय द चिल्ड्रेन. *जर्नल ऑफ़ द फैकलिटी ऑफ़ द एजुकेशन*. 18(1). पृष्ठ 281–291. DOI: 10.17679/inuefd.306625

गिडेंस, ए. 2009. *सोशियोलॉजी*. छठा संस्करण. पॉलिटी प्रेस, कैम्ब्रिज.

डॉगन, आई. 2011. *एजुकेशनल सोशियोलॉजी*. नोबेल अकादमी, अंकारा. https://ankara.pegemakademi.com/

चर्नी, आई.डी., सी.एस., सिविर्ट, टी.एम. डिकी और जे.डी. फ्लिचबिल, 2006. चिल्ड्रनंज़ ड्राइंग्स: ए मिरर टू दियरमाइंड. *शैक्षिक मनोविज्ञान*. 26 (1). पृष्ठ 127–142. https://eclass.uowm.gr/modules/document/file.php/EIED247/literature/Malandrakis%20G./ पर देखा गया।

टुटकुन, ओ.एफ. और एम. कोक, 2008. स्टीरियोटाइप्स एट्रिब्यूटड टू प्रोफेशनज़. *एजुकेशनल साइंसेज जर्नल*. वॉल्यूम 41. अंक 1. पृष्ठ 255–273. अंकारा यूनिवर्सिटी, अंकारा. https://www.researchgate.net/publication/284459556_Mesleklere_Atfedilen_Kalip_Yargilar पर देखा गया।

© NCERT not to be republished

टिट्ज़, डब्ल्यू. एम. 2007. वीमेन एंड मेन इन एकाउंटिंग टेक्स्ट बुक्स: एक्सप्लोरिंग द हिडन करिकुलम. *इश्यूज़ इन एकाउंटिंग एजुकेशन*. 22 (3). पृष्ठ 459–480. http://dx.doi. org/10.2308/iace.2007.223.459 पर देखा गया।

पायने, एम.ए. 1990. इफ़ेक्ट्स ऑन पैरेंटल प्रजेंस/एब्सेंस ऑन साइज़ ऑफ़ चिल्ड्रेन'ज़ ह्यूमन फिगर ड्राइंगज़. *पेर्सप्चुअल एंड मोटर स्किल्स*. 70. पृष्ठ 843–849.

माइल्स, एम.बी. और ए.म. हुबेर्मन. 2015. क्वालिटेटिव डाटा एनालिसिस: एन एक्स्पंडेड सोर्सबुक. थाउजेंड ओक्स. सेज पब्लिकेशन्ज, कनाडा.

मोरा, एन. 2005. सेक्सिस्म रिप्रोड्यूसद इन मास मीडिया एंड इट्स रिफ़्लेक्शन इन सोसाइटी. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ ह्यूमन साइंसेज*. 2 (1), पृष्ठ 1–7. https://www.researchgate.net/publication/26451490_Kitle_iletisim_araclarinda_yeniden_uretilen_cinsiyetcilik_ve_toplumda_yansimasi

यूनेस्को. 2006. टीचर्स एंड एजुकेशनल क्वालिटी: मॉनिटरिंग ग्लोबल नीड्स फ़ॉर 2015. मॉन्ट्रियल: यूनेस्को: इंस्टीट्यूट फ़ॉर स्टेटिस्टिक्स. यूनेस्को, पेरिस, फ्रांस.

———. 2012. यूनेस्को स्ट्रेटेजी ऑन टीचर्स (2012–2015). http://unesdoc.unesco.org/images/0021/002177/217775e.pdf.

यवुज़र, एच. 2013. *बॉय विद पिक्चर्स*. रेमजी बुकस्टोर, इस्तांबुल.

लिंडरमैन, एम.जी. 1997. *आर्ट इन द एलिमेंट्री स्कूल*. मैकग्रा-हिल कंपनीज, संयुक्त राज्य अमेरिका.

© NCERT not to be republished